भारत सरकार

परमाणु ऊर्जा विभाग

राज्यसभा

तारांकित प्रश्न संख्या 295

उत्तर दिनांक 27.03.2025 को दिया गया

दुर्लभ मृदा धातुओं का उत्खनन

*295. श्रीमती सागरिका घोष

क्या प्रधानमंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :-

(क) विगत तीन वर्षों के दौरान कितनी मात्रा में दुर्लभ मृदा धातुओं का उत्खनन किया गया है;

(ख) इन दुर्लभ मृदा धातुओं का उत्खनन किन-किन राज्यों में किया गया है;

(ग) इन दुर्लभ मृदा धातुओं का उपयोग किन-किन उद्योगों में किया जा रहा है; और

(घ) क्या अत्यधिक उपयोग के कारण इन धातुओं के स्रोत समाप्त होते जा रहे हैं?

उत्तर

राज्य मंत्री, कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन तथा प्रधानमंत्री कार्यालय (डॉ. जितेन्द्र सिंह)

(क) से (घ) सदन के पटल पर विवरण प्रस्तुत है।

*****

भारत सरकार

परमाणु ऊर्जा विभाग

"दुर्लभ मृदा धातुओं का उत्खनन" के संबंध में श्रीमती सागरिका घोष द्वारा पूछे गए राज्य सभा तारांकित प्रश्न संख्या 295 के भाग (क) से (घ), जिसका उत्तर दिनांक 27.03.2025 को दिया जाना है, के उत्तर में संदर्भित विवरण।

(क) व (ख) विरल मृदा धातुओं को किसी भी स्रोत से सीधे नहीं निकाला जाता। भारत में, विरल मृदा तत्वों से युक्त प्रमुख खनिज मोनाज़ाइट है, जो छह अन्य खनिजों के साथ मिश्रित रूप में पाया जाता है। परमाणु ऊर्जा अधिनियम 1962 के अनुसार मोनाज़ाइट एक अधिनिर्दिष्ट पदार्थ है। परमाणु ऊर्जा विभाग (डीएई) के अंतर्गत सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रम (पीएसयू) आईआरईएल (इंडिया) लिमिटेड है, जो भारत में उच्च शुद्ध विरल मृदा (आरई) ऑक्साइड का उत्पादन करने के लिए मोनाज़ाइट को संसाधित करने वाला एकमात्र संस्थान है। ये उच्च शुद्धता वाले आरई, आगे, आरई धातुओं के उत्पादन के लिए उपयोग किए जा सकते हैं।

(ग) विरल मृदा धातुओं पर निर्भर प्रमुख उद्योग इलेक्ट्रॉनिक्स, नवीकरणीय ऊर्जा, इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी), ऑटोमोटिव, रक्षा और वांतरिक्ष, चिकित्सा आदि हैं।

(घ) नहीं।

*****